आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे ◆ ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव ◆ मुकुंद कुलकर्णी ◆ मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य ◆गोपाल सत्पुरे

सभी छायाचित्र - स्थानिक छायाचित्रकार

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा साईराम ग्राफीक्स, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	पारदर्शिता बनाम ????	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	७
आंतर भारती - २	बसव वचन	९
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	१०
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	११
विशेष आलेख - १	युवा और राष्ट्र निर्माण	१३
समाचार भारती-१	अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला का ४७ वां अधिवेशन फूलगांव (पुणे)	१६
आह्वान -		१८
समाचार भारती-२	अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला ४७ वे अधिवेशन २८ से ३० दिस.१३ काअध्यक्षीय भाषण	१९
समाचार भारती-३	गुजरात में साने गुरुजी जयंति	२५
समाचार भारती-४	साने गुरुजी जयंति के कार्यक्रम किनवट में	२६
चिंतन भारती - १	हमारी पहचान - भारतवासी या .... ?	२७
समाचार भारती-५	गोवा में पू.साने गुरुजी जन्म दिन कार्यक्रम	३०
विशेष आलेख - २	नौकरी या व्यवसाय करनेवाले श्रद्धा और सम्मान के पात्र हैं !	३१

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

पारदर्शिता बनाम ????

पारदर्शिता बनाम दुष्ट चेतना

परादर्शिता बनाम भ्रष्टाचार

पारदर्शिता बनाम न्याय

पारदर्शिता बनाम सामाजिक न्याय

पारदर्शिता बनाम इन्सानियत

ये कोई कवितात्मक पंक्तियाँ नहीं हैं, वर्तमान सामाजिक जीवन में हर पल राज करती भ्रष्टता के साक्षीभूत

अक्षर सत्य है.

भारतीय संविधान में किए गए प्रावधान, संविधान के निर्माण के पूर्व ही बनाए गए सैकड़ों कानूनी प्रावधान और आज़ादी के बाद बनाये गए अधिनियमों, नियमों और कानूनी प्रावधानों के तहत पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त शासन व्यवस्था की जो परिकल्पना की गई है, वह आए दिन समाज व व्यवस्था को दूषित करने के कगार पर उतर रही भ्रष्ट शक्तियों से बचाने के लिए अदालतों, कानून-व्यवस्था द्वारा अभिकल्पित तमाम अभिकरण, असंख्य अधिनियम-नियम, मानवीय-मूल्य लगातार संघर्ष जारी है. भ्रष्ट तत्वों की दुष्ट-चेतना की वजह से बढ़ती भ्रष्टता से इन्सानियत को ठेस पहुँच रही है. ये तत्व इतने प्रबल हो रहे हैं कि इनकी पहुँच पारदर्शिता लाने के लिए गठित हर तंत्र तक इनकी पहुँच सुलभ हो पा रही है. इससे मुक्ति के तमाम उपाय न काम होने की स्थिति पैदा होते नज़र आना निश्चय ही समाज के सार्थक अस्तित्व के लिए घातक है.

विगत दशक में शासन व व्यवस्था में पारदर्शिता लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में सूचना अधिकार अधिनियम को पारित किया गया था, जिससे आम आदमी को शासन-तंत्र से जरूरी सूचना प्राप्तकर पारदर्शिता से आश्वस्त होने का अवसर व अधिकार प्रदान किया गया था. विगत आठ वर्षों में इस अधिनियम के प्रावधानों का फायदा उठाते हुए कई सचेत कार्यकर्ताओं ने कई मुद्दों से संबंधित सूचना इकट्ठा करने के सक्रिय कदम उठाकर यह स्पष्ट कर

दिया है कि भ्रष्टता पग-पग पर फैलती रही है. भ्रष्टाचार मुक्त भारत की संकल्पना से विगत वर्षो में जो भी जन अभियान छेड़े गए थे, उनके परिणामस्वरूप आखिरकार किसी रूप में लोकपाल और लोकायुक्तों का विधेयक, २०१३ संसद में पारित हो गया है. यह लोकपाल पारदर्शिता लाने तथा भ्रष्टाचार मुक्त भारत को बनाने में कितना कामयाब रहेगा, यह भविष्य ही कह पाएगा. एक तरफ लोकपाल कानून को पारित करने में अपनी ईमानदारी व निष्ठा के ढींग हांकते हुए चुनाव की तैयारियाँ में लगे राजनैतिक दल यह बड़ी भूल जरूर करने के लिए तैयार हो रहै हैं कि उनके आय के स्रोतों के पोल खोलने में सक्षम सूचना अधिकार अधिनियम के दाँतों को निर्मम रूप से काट दिया जाए. पारदर्शिता बनाम राजनीति का यह सबसे बड़ा मायाजाल है.

शासन में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार से पूरी तरह से मुक्ति केवल कानूनी प्रावधानों व इसको नियंत्रित करनेवाले अभिकरणों से संभव नहीं है. इसमें व्यापक रूप से व्यवस्था परिवर्तन के साथ-साथ जन-मन में परिवर्तन की जरूरत है. जन-सेवा के लिए प्राप्त अधिकारों का जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों द्वारा दुरुपयोग, दुनिया में धन-प्राप्ति, भोगविलास की ओर बढ़ते आकर्षण, नैतिक व्यवहार के प्रति निष्ठा का अभाव - ये सारे ऐसे प्रबल कारण हैं, जो बड़ी चुनौती बन गई हैं. इन चुनौतियों का सामना करने में कुछ हद तक विकसित सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी हमारे लिए मददगार साबित हो सकती है. आधार के नाम से विशिष्ट पहचान संख्या आबंटन के साथ पहचानपत्रों को जारी करने के लिए संकल्पित अभियान की कई बहानों से आलोचना हो रही है. वास्तव में इस तरह की सुदृढ़ व्यवस्था बनाकर सभी प्रकार के आर्थिक व्यवहारों को इनके साथ जोड़ने से भ्रष्ट कमाई पर रोक लग सकती है. मगर इस तरह के पारदर्शी तंत्र से अपने-अपने पोल खुलने की आशंका से हमारे जन-प्रतिनिधि व अधिकारीवर्ग ऐसी व्यवस्था को ईमानदारी से लागू करने, व्यापक बनाने से कतरा रहे हैं. लोकपाल से जवाबदेही लाने की आशा की जा रही है, मगर इसमें भी जनप्रतिनिधियों, अधिकारीवर्ग के मानसिक व व्यवहारगत परिवर्तन की जरूरत है, इसके बिना यह आशा पूरी नहीं हो पाएगी. जन-सेवा के लिए प्राप्त अधिकारों, जिम्मेदारियों को अपनी स्वार्थसिद्धि, अपनी सुख-सुविधाओं में बदलने की प्रवृत्ति जब तक खत्म नहीं होती तब तक भ्रष्टाचार से मुक्ति संभव

(पृष्ठ ८ पर...)

तुकाम्हणे

(मराठी)

अवघी भूतें साम्या आलीं

अवघीं भूतें साम्या आलीं । देखिली म्यां कैं होतीं ॥ध्रु॥
विश्वास तो खरा मग । पांडुरंगकृपेचा ॥१॥
माझी कोणी न धरो शंका । हो कां लोकां निर्द्वंद्व ॥२॥
तुका म्हणे जें जें भेटे । तें तें वाटे मी ऐसें ॥३॥

हिन्दी भावानुवाद :

'सबमें मैं अपने को देखूं'

(संत तुकाराम को आता देखकर स्वेत चुग रहे पक्षी उड गये ।
उस समय तुकाराम के मन का चिंतनात्मक अभंग)

प्राणिमात्र हो ब्रह्मरूप, हो और सब समान हों मेरी दृष्टि में ।
ऐसी भावना कब जागेगी, होंगे एक सब मेरी दृष्टि में ॥१॥
ऐसा होगा, तब समझूँगा, विठ्ठल-कृपा हुई है मुझ पर ।
ब्रह्मरूप मैं हो जाऊँगा, सबमें पांडुरंग देखकर ॥२॥
कोई मुझे न पराया जाने ना माने मुझसे किंचित भय ।
सारा विश्व, सारे प्राणी भी, मुझसे हों निर्द्वन्द्व औ निर्भय ॥३॥
तुका कहे ऐसा कब होगा-सब हैं मुझमें, मैं सबमें हूँ ।
जिस-जिससे भेंट हो मेरी, मुझे लगे यह, वह मैं ही हूँ ॥४॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

All living beings are alike

Awagheen bhooten samyaa aali

When all living beings are alike,
Why do I notice this difference ?

Now, do I experience this assurance
Of grace from Panduranga[1].

Let no one doubt me any more.
All living beings are one and the same.
Says TUKA, whoever meets me will now be
none other than myself !

1. - Panduranga - Loard Vitthala.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

(पृष्ठ ६ से...)

नहीं है. अपने को जन सेवक मानते हुए पूरी निष्ठा, ईमानदारी के साथ साधारण जन के ही रूप में अपने को भी मानकर जो व्यवहार करने लगेंगे वे ही इस व्यवस्था में पारदर्शिता ला पाने में समर्थ हो पाएंगे. अधिकार व जिम्मेदारियों के मदांध बनकर दुरुपयोग करनेवालों के चुंगुल से इस व्यवस्था को जब तक हम नहीं बचा पाएंगे, पारदर्शिता एक दुरूह सपना बन कर रह जाएगा और बढ़ती भ्रष्टता की वजह से आम जनता की यातनाएं बरक़रार रह जाएंगी.

यह नव वर्ष जन-जन के मन में नई आशा व चेतना पैदा करे जिससे कि वे अपने जीवन में ईमानदार व्यवहार अपनाने के लिए संकल्पबद्ध होकर तदनुरूप व्यवहार के लिए पूरी निष्ठा से प्रतिबद्ध हो जाएं, समाज में ऐसी ताक़त बढ़ जाए कि दुष्ट व भ्रष्ट तत्वों विरुद्ध संघर्ष में कामयाबी हासिल हो जाए इसी आशा व शुभकामनाओं के साथ..

'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' की शुभकामनाओं सहित...

डॉ. सी. जम शंकर बाबु

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

नीनोलिदरे कोरडू कोनरुवदय्य
नीनोलिदरे बरडू हयनहुदय्य
नीनोलिदरे विषवु अमृतवहुदय्य
नीनोलिदरे सकल पडिपदार्थ
इदिरलिर्पवु कूडलसंगमदेव

हिंदी काव्यानुवाद :-

तुम्हारी कृपा होगी तो ठूंठ पल्लवित होगा
तुम्हारी कृपा होगी दूध न देनेवाली गाय दूध देने लगेगी
तुम्हारी कृपा होगी तो विष अमृत होगा
तुम्हारी कृपा होगी तो सब पदार्थ
अर्थपूर्ण बनेंगे कूडलसंगमदेव ।

भाष्य -

भक्ति के भण्डार महात्मा बसवेश्वर अपने आराध्य के प्रति समर्पित और आश्वस्त हैं कि, ठूंठ जिसमें जीवन प्रवाह नहीं वह पल्लवित होगा. नये कोंपल फूटेंगे, नये पत्ते उग आयेंगे. दूध न देनेवाली गायें दूध देने लग जायेंगी. विष अमृत होगा. निरर्थक वस्तुएँ अर्थपूर्ण बन जायेंगी. मात्र उसकी कृपा से वह सब संभव है. 'मूकं करोति वाचालं पगुं लङ्घयते गिरीम' ईश्वर की कृपासे गूंगा बोलने लगता है, अपंग अपाहिज चलने लगता है, चलने ही नहीं पर्वत चढ जाता है. अनहोनी को होनी करता है, होनी को अन होनी. रंक को राजा राजा को रंक. निरर्थक वस्तुएँ सार्थक बन जाती हैं. आम आदमी के चाहने न चाहने से कुछ होता नहीं, उसकी मर्जी से सबकुछ होता है. इस तरह का विश्वास मन में रख कोई जीने लग जाय तो वह दुखी नहीं होगा. कर्म करना, रहेगा फल की आशा न रखते हुए. यही आनंदमय जीवन की कुंजी है. भक्त हृदय पाकर मनुष्य सुख चैन प्राप्त कर सकता है. यही इस वचन का साद है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

आंतर भारती - ३

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्ल़रवियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ५. इल्वाळ्क्कै (गृहस्थ-जीवन)

इमल्बिनान् इल्वाळ्क्कै वाळ्बवन् एन्बान्
मुयल्वारुळ् एल्लाम् तलै । (कुरल - ४७)

श्रेष्ठ-साधक
वह जो गृहस्थी में
धर्म-मार्गी हो ।

भावार्थ *- धर्म-मार्ग पर चलते हुए गृहस्थी अपनानेवाला अन्य साधकों से भी श्रेष्ठतर होता है ।*

आट्रिन् ओळिक्क अ़रनिळुक्का इल्वाळ्क्कै
नो़रपारिन् नोन्मै उडैत्तु । (कुरल - ४८)

मददगार
गृहस्थी ही तो श्रेष्ठ
तपस्वी से भी ।

भावार्थ *- अपने धर्माचरण से दूसरों के कर्त्तव्मों में मददगार गृहस्थी तप-साधना करनेवाले संन्यासी से भी श्रेष्ठ होता है ।*

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

खंडाला लोनावला

'खंडाला लोनावला' पर्वतीय पुर स्थान ।
नैसर्गिक शोभाकरी, स्वास्थ्यकरी है स्थान ॥
'कारला' गुफ़ा में भित्ति चित्र बहुत कमनीय ।
शिव मंदिर बौद्धविहार, उसमें सुदर्शनीय॥
'भाजे' गुफ़ा में स्तंभ औ स्तूप च विराजमान ।
उसमें बौद्ध विहार है, जो हो बहुत पुराण ॥
'बेडसा' गुफा में लसें नारी का श्रृंगार ।
भिंत्तिचित्र में तोल से, पशुओं का श्रृंगार ॥

महाबलेश्वर

महाराष्ट्र का रमणीक 'महाबलेश्वर' स्थान ।
है पाँच सरिताओं का पवित्र उद्गम स्थान ॥

वेण्णाझील

यात्री झष लख झील में पाते नेत्रानंद ।
और झील में तैरकर पाते देहानंद ॥
'महाबलेश्वर' में मिलें, ह्यारोह का तोष ।
'प्रतापगढ़' का किला तो भव्य दुर्ग कहलाय ।
शिवाजी के दुर्गो में यह उत्तम बतलाय ॥
'पंचगनी' में नदी, कृष्णा प्रवाह धार ।
इस में ऐसे पेड़ हैं, जो हो छायादार ॥
यहाँ बादलों के दृश्य, देते नेत्रानंद ।
यहाँ की हरियाली भी, देती नयनानंद ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६००००५.

शुभकामनाएँ !

शबरी परिवार मिलन

चेन्नई में

फरवरी २०१४ में

संपर्क

शबरी शिक्षा संस्थान, शबरी पॅलेस,

१९४, सेकण्ड अग्रहारम सेलम - ६३६००१

मो.०९४४३१६५४१४ / ०९४४३३६५४१४

●❖○❖●❖○❖●❖○❖●❖○❖●❖○❖●❖○❖●❖○❖

शुभकामनाएँ !

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय एकता युवा शिविर

पोर्ट ब्लेयर, अंदमान

२१ फरवरी से २७ फरवरी २०१४

संपर्क

श्री के.सुकुमारन

नेशनल यूथ प्रॉजेक्ट, युवा विकास केन्द्र

पय्यानूर - ६७०३०७, जि.कन्नूर (केरल)

विशेष आलेख - 9

युवा और राष्ट्र निर्माण

- डॉ.राम प्रकाश शर्मा 'सरल'

किसी भी देश का राष्ट्रीय स्वरूप, प्रतिभा और चरित्र उस देश की युवा-शक्ति और क्षमता को देखकर जाना जा सकता है. युग द्दष्टा और हृदय सम्राट स्वामी विवेकानन्द ने भी युवाओं की शिक्षा पर सर्वाधिक बल देकर चरित्र-बल निर्माण की प्रेरणा दी थी. बालशेविक क्रान्ति के प्रणेता लेनिन ने किसी भी देश के भविष्य को जानने के लिये वहां के युवाओं और बच्चों के गीतों को राष्ट्रीय-कसौटी बताया है. आज भारत में युवाओं और बच्चों में संस्कारित गीतों की दैनिक जीवन-चर्या में गाने और गाते रहने की महती आवश्यकता है. इक्कीसवीं सदी भारत में युवाओं की प्रतिभा सम्पन्नता के लिए ही जानी जायेगी.

भारत का इतिहास साक्षी है कि विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को, समर्थ गुरू रामदास ने शिवाजी को, महामति प्राणनाथ ने छत्रसाल को राज धर्म और राष्ट्र धर्म की अद्‌भुत शक्तियों से सम्पन्न किया था. युवा सिद्धार्थ ने राज धर्म का परित्याग कर धम्म-प्रवर्तन चक्र का सूत्रपात कर बौद्ध-धर्म का विश्व-गृहीत स्वरूप प्रचलित किया. इसी प्रकार प्रज्ञा पुरूषों में रामानन्द ने कबीर को और संत यादवेन्द्रपुरी ने चैतन्य प्रभु निताई को जन जागरण के कर्मक्षेत्र में चैतन्य प्रभु निताई को जन जागरण के कर्मक्षेत्र में प्रवेश करने की दीक्षा दी जो आज भी कर्म और आध्यात्म के समन्वय के आदर्श हैं. महर्षि दयानन्द भी अपने गुरू का आशीर्वाद पाकर अपने आत्मबल से राष्ट्रीय उत्थान में निरन्तर संलग्न रहे. और स्वामी विवेकानन्द ने तो अपनी युवावस्था को ही लोक-सेवा के लिए समर्पित कर दिया उन दोनों भू-रत्नों ने अपनी संकल्प-शक्ति से भारतीय संस्कृति में प्राण चेतना का संचार किया है. किसी भी देश का चरित्र वहां के युवाओं को देखकर समझा जा सकता है. कोई भी देश अपने युवाओं के चरित्र से ही ऊँचा हो सकता है. किसी भी देश के नागरिकों का बौद्धिक स्तर उस देश के शिक्षकों के बौद्धिक स्तर उस देश के शिक्षकों के बौद्धिक स्तर से ही श्रेष्ठ बनता है. युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं की शिक्षा पर दार्शनिक दृष्टि से सर्वाधिक बल दिया.

इक्कीसवीं सदी भारत में युवा प्रतिभा के समुचित सम्मान के लिए जानी

जाएगी. जन्म से ही प्रतिभा सम्पन्न बहुत कम व्यक्ति देखे व सुने जाते हैं. यह भी सत्य है कि प्रत्येक मानव में स्वाभाविक रूप से अन्तः प्रतिभा होती है जिसे विशेष अवसरों, संघर्षों, स्पर्श एवं सहयोग से परिष्कार करके विकासोन्मुखी बनाया जाता है. ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य जाति है. जिसके अन्तःकरण में सिन्धु से भी विशाल और अगम्य ज्ञान-विज्ञान का अपरिमित भण्डार प्रसुप्त-अवस्था में है. मनुष्य अपने जीवन में अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मस्तिष्क के न्यूनतम भाग का ही प्रयोग कर पाता है. उसकी अनन्त प्रतिभा जीवनभर अनछुई नव-रवि-रश्मि की भांति रह जाती है और वह पुनः देह समाप्ति के साथ ही विनष्ट भी हो जाती है.

प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं. बरसती, वह तो अन्दर से प्रस्फुटित होती है. सवर्ण और जो सवर्ण नहीं हैं उन दोनों को समान रूप से वरण करती है. वह कबीर और रैदास को भी वरण करती है और तुलसी और नानक को भी जो चिरन्तन काल तक बनी रहेगी.

युवाओ का सम्मान राष्ट्रीय और वैश्वविक सम्मान है. नए युग के निर्माण के आधारभूत अंग युवा हैं जिन्हें अब तक समुचित सम्मान प्राप्त नहीं हुआ. बड़े से बड़े कार्यों और आपदाओं को सुलझाने और सहपाने में युवाओं की शक्ति जीवन की तीसरी-चौथी अवस्था में पहुँचे व्यक्तियों से कही अधिक होती है. इतिहास की ओर यदि मुड़ें और देखें तो अनुभवी व्यक्तियों ने अपने अर्जित अनुभव और ज्ञान से युवकों को अपने संरक्षण का बल प्रदान किया है.

विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को यज्ञ रक्षा के बहाने अपने आश्रम में ले गये थे वहाँ उन्हें बला, अति बला विद्याएँ प्रदान की थीं. चाणक्य ने चंद्रगुप्त को कोई बड़ा खज़ाना नहीं दिया था अपितु उन्हें संकल्प बल उपलब्ध कराया था. समर्थ गुरू रामदास ने शिवाजी को कोई धन-दौलत नहीं दी थी उन्हें अजेय शासक के गुणों से एवं आत्म-बल से लबालब कर दिया था. छत्रसाल ने सिद्ध-पुरुष महाप्रभु से ही वह प्राण-दीक्षा प्राप्त की थी. जिसके सहारे वह राज ऋषि कहला सके. दैवीय शक्तियों ने सिद्धार्थ को राज धर्म से विरक्त कर धर्म चक्र-प्रवर्तन में संलग्न किया. रामानंद ने कबीर को स्वर्ण की खदाने नहीं सौपीं थीं. वरन वह प्रतिभा प्रदान की थी. जिसके कारण कुलीनता एवं विद्वता के अभाव में भी अपने समय के प्रचण्ड समाज प्रवर्तक के रूप में विश्व विख्यात हुए. पवन ने अपने पुत्र हनुमान को वह वर्चस्व प्रदान किया कि रामचरित में मेरूदण्ड जैसी भूमिका का निर्वाह कर सकें. संत यादवेन्द्रपुरी ने अपने शिष्य चैतन्य को जन-

जागरण के कर्म क्षेत्र में उतारा था. स्वामी विरजानन्द ने दयानन्द को ऐसा ही पुरुषार्थ प्रकट करने के लिए चरित्र-बल, आत्मबल, आध्यात्म-बल प्रदान कर राष्ट्र उत्थान के लिए समर्पित किया. रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द को लोक-मंगल के लिए समर्पित किया. इन दोनों नर-रत्नों में अपनी संकल्पवान् शक्ति से मूर्च्छित भारतीय संस्कृति में प्राण-चेतना का नव-संचार किया. ये दोनों ही महापुरूष बहुत निकट ही युगाब्दी से जुड़े हैं.

प्रतिभाओं का संवर्धन एवं संरक्षण राष्ट्र की ओर से करना नितान्त पुनीत कर्तव्य होगा. गाँवों, गली, नगरों में ऐसी अनगिनत प्रतिभाएँ हैं जिन्हें राष्ट्र के नव-निर्वाण में सम्मिलित होने का अवसर ही नहीं मिल पाता है. और प्रतिभाशाली, उत्साही, युवा बालक पढ़ने के लिए तरसते ही रह जाते हैं.

नवयुग के सूर्योदय में इक्कीसवीं सदी प्रतिभाओं की क्रीडास्थली भारतभूमि बनेगी और युवाअें को अपनी प्रतिभा के बल पर राष्ट्र निर्माण के किसी भी कौशल में पीछे न रहें. विज्ञान-तकनीकी, संचार, सामरिक, शक्ति, कला, अभिनय, चिकित्सा, उद्योग, अध्यात्म ज्ञान और कर्म की गहरी समझ-बूझ की आवश्यकता को देखते हुए बहुआयामी क्षेत्रों में सक्षम बनने की आवश्यकता है.

आज अमेरिका जैसे देश भारत की युवा प्रतिभा से अत्यधिक आश्चर्य के साथ प्रभावित हैं. कम्प्यूटर, संचार तकनीकी में भी भारत के मस्तिष्क की संसार भर में गूंज है. नासा में ५० प्रतिशत वैज्ञानिक आने वाले ५ वर्षों में भारत के ही होंगे. गणित, विज्ञान विषयों को जो देश पिछले कुछ वर्षों से अपनी थाती समझते थे. वह आज हैरान हैं कि भारत के बालक-बालिकाओं ने इन्हें अपना खेल और मनोरंजन का साधन बनाकर उनकी थाती से छीन लिया है. अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत का नाम विश्व वैज्ञानिकों की सूची में पुनः सम्माननीय रूप से जुड़ गया है.

मैं देश के अभिभावकों, वर्तमान और भावी मातापिता, शिक्षकों तथा मार्गदर्शकों से एक विनम्र अनुरोध करना आवश्यक समझता हूँ कि आप सब मिलकर अपनी बच्चों की प्रतिभा को विकसित होने का समुचित परिवेश प्रदान कीजिए, उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित कीजिए. यही अनुभवी पीढ़ी का मानव-धर्म है.

भारत विश्वगुरू था और फिर विश्वगुरू बनेगा -

कहेगा जगत् फिर से इस स्वर से सारा ।

वही वृहत् भारत, गुरू है हमारा ।

समाचार भारती -१

अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला का ४७ वां अधिवेशन फूलगांव (पुणे)

नीति और विज्ञान का समन्वय चाहिए : भाई वैद्य

साने गुरुजी के वाङ्मय नीतिप्रिय हैं. आज के युग में नीति तथा विज्ञान के संयोग को मानवता का आधार चाहिए पर विज्ञान में लालित्य आने की आवश्यकता है. संस्कारों का विचार हो व्यापक अर्थ में होना ही चाहिए. संस्कार धर्मनिष्ठ नहीं होने चाहिए. बच्चों को विश्व आत्मप्रेरित करने वाला होना चाहिए.

भाई वैद्य, ज्येष्ठ समाजवादी नेता

पुणे दि. २९ (प्रतिनिधि) - साने गुरुजी कथामाला का उपक्रम बहुभाषिक होने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है. कथाकथन के माध्यम से संस्कार डालने का काम किया जाता हैं. परन्तु आज के संस्कार दिखानेवाले और बाजाराधिष्ठित होना चाहते है. इस बाजारी वातावरण में बच्चोंपर होनेवाले संस्कार धर्म और विज्ञान की अपेक्षा नीति और विज्ञान से मेल डालनेवाला होवे. ऐसा प्रतिपादन ज्येष्ठ समाजवादी नेता भाई वैद्य ने किया.

अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला का ४७ वां अधिवेशन हवेली तालुका के फूलगाव में हुआ, उस समय कहा था. अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला के अध्यक्ष जयवंत ठाकरे कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थान पर थे. ज्येष्ठ समाजवादी नेता पन्नालाल सुराणा, 'प्रभात' के उपसंपादक मिलन म्हेत्रे, जयवंत मठकर, आन्तर भारती के सदाविजय आर्य, अवधूत म्हमाणे, अशोक तिळवी, श्यामराव कराळे, राहुल यादव, प्रा.चन्द्रकान्त इंदूरे, अशोक खानापुरे, पूर्व विधायक गंगाधर पटणे आदि उपस्थित थे.

अधिवेशनाध्यक्ष जयवंत ठाकरे इस समय बोले कि विज्ञान तंत्रज्ञान की प्रगति अब उच्च शिखिर पर है. परस्पर के संबंध वॉटस् अप, इंटरनेट द्वारा जोड़े जाते हैं. इंटरनेट से दुनिया नजदीक लाईगई है पर मनुष्य दूर जा रहा है. इसके लिए कथामाला के कार्यकर्ताओं ने समय देकर उसके-लिए काम करने की आवश्यकता बढ़ी है.

मराठी भाषा के शुद्धलेखन के लिए और संवर्धन के लिए कथामाला और भाषा इसका अनुबंध हटाने की आवश्यकता है. यह काम राज्यभर में चलनेवाले साने गुरुजी कथामाला के कार्यकर्ता अच्छी तरह से कर सकते हैं ऐसा मनोगत मिलन म्हेत्रे ने व्यक्त किया.

इस अधिवेशन के बीच में बाल सेवा पुरस्कार फाल्कन मुव्हमेंट एसोसिएशन

को दिया गया. उत्कृष्ट कथा निवेदक का पुरस्कार स्मिता देसाई (मडगाव गोवा) को दिया गया. वैसे ही आदर्श कथामाला शारवा पुरस्कार सांगोला तालुका साने गुरुजी कथामाला शारवा को दिया गया. कथामाला को अनमोल योगदान देने के लिए प्रा.चन्द्रकान्त इंदुरे को सम्मानित किया गया. कार्यक्रम सूत्रसंचालन निर्मला रिवलारे ने किया. अवधूत म्हम्हणे ने आभार प्रदर्शन किया.

इसी अधिवेशन में ''कथामाला और समविचारी संस्थाओं का सहयोग'' इस विषय पर एक परिसंवाद २९ दिस. को दोपहर ३ बजे हुआ. जिसमें डा.न.म.जोशी जी की अध्यक्षता में प्राचार्य सदाविजय आर्य (आंतर भारती) श्री पन्नालाल सुराणा (राष्ट्र सेवादल), श्री मा.बा.पारसनीस (बालक संस्था) श्री द्वारकानाथ लेले (कथामाला) ने अपने विचार रखे.

इस परिसंवाद से पहले दोपहर १२ बजे श्रीमती रेणु गावस्कर ने ''संस्कारों की जवाबदारी पालकों की या शिक्षकों की'' इस विषय बहुत ही हृदयस्पर्शी प्रभावी ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किए थे.

शोभा यात्रा से अ.भा.साने गुरुजी कथामाला के अधिवेशन का समारोप.

पुणे - अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला के ४७ वे अधिवेशन के समापन के प्रसंग पर परिसर में शान्ति की शोभा यात्रा निकाली गई. इस अवसर पर धोत्रे विद्यालय के विद्यार्थियों की ग्रन्थ यात्रा आयोजित की गई. छत्रपती शिवाजी महाराज सुभाषचंद्र बोस, म.गांधी, साने गुरुजी, सान्ताक्लाज के वेश में बच्चे शोभायात्रा के आगे आगे थे. अधिवेशन में आए हुए सब कार्यकर्ता शोभायात्रा में सहभागी हुए. शोभायात्रा के बाद सोलापुर, गोवा, सिंधुदुर्ग, पुणे इत्यादि कथामाला के विद्यार्थियों ने कथाकथन और देशभक्ती के गीत प्रस्तुत किए. समारोप पर प्रा. माधव वझे प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे. संस्कार करने नहीं पडते. वे अपने आप होते है. ऐसा प्रतिपादन उन्होंने किया.

कथामाला के अध्यक्ष जे.यू.नाना ठाकरे ने मनोगत व्यक्त किया. कथामाला के माध्यम से बच्चों पर संस्कार का संदेश इस प्रसंग पर कार्यकर्ताओं को देकर देकर कथामाला के कार्य का प्रचार करने का संकल्प कार्यकर्ताओंने किया. श्रीमती अपर्णा निरगुडे ने सूत्र संचालन किया. सब कार्यकर्ताओं के परिश्रम से अधिवेशन सफल कर पाए. ऐसा श्री शामराव कराळे ने आभार देते समय कहा.

दि.२९ को रात में कथामाला की साधारण सभा हुई जिसमें कई सदस्यों ने

(पृष्ठ २६ पर...)

आह्वान

दि. ०९.०१.२०१४

प्रिय साथियो !

आपने २४ दिसम्बर को साने गुरुजी जयंति पर क्या कार्यक्रम किया इसकी रिपोर्ट भेजें.

१० मई को अपनी वार्षिक बैठक इस बार इन्दौर (म.प्र.) में होगी. अभी से आने का निश्चित कर लें.

आंतर भारती की ओर से आप आपके विद्यालय, महाविद्यालय के प्रदेश के बच्चों, युवाओं, शिक्षकों और युवतियों के लिए कम से कम एक-एक दिवसीय शिविरों का आयोजन करें. तदर्थ मार्च में में आंतर भारती की ओर से श्री राजेंद्र बहालकर ये शिविर लेंगे. उन्हें मार्गव्यय के अतिरिक्त र.१०००/- मानधन देना होगा. चारों दिन चार शिविर ले सकते हैं.

स्कूल के विद्यार्थियों के लिए - चलो पढ़ाई करें, मज़े से !
युवाओं के लिए - अभिव्यक्ति विकास
युवतियों के लिए - चलो, निर्भय बनें
शिक्षकों के लिए - प्रभावी शिक्षा

आशा है आप इन आनंददायी शिविरों का आयोजन अवश्य करेंगे ये शिविर आनंददायी व प्रभावी होंगे. स्कूल व कॉलेजों में अल्प शुल्क लगाकर आप आयोजन कर सकते हैं. कृपया रुचि लेकर आयोजन कर सक्रिय बनें.

गुजरात, म.प्र., महाराष्ट्र, उ.प्र., राजस्थान, बिहार, गोवा, उत्तरखंड, हिमाचल, अरुणाचल, त्रिपुरा, आसाम में तो आयोजन अवश्य हों. तारीखों के लिए तुरंत संपर्क करें. सक्रियता की अपेक्षा के साथ.

आपका ही -

सचिव

आंतर भारती
Mob. 09823156777, e-mail : aryavidyavanshi@gmail.com

अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला ४७ वे अधिवेशन २८ से ३० दिसम्बर २०१३ का

अध्यक्षीय भाषण

मा.बानासाहेब जयवंतराव ठाकरे

अध्यक्ष, अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला

अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला के ४७ वें अधिवेशन में ''फूलगांव'' का परिसर सही अर्थ में खिल गया है. कल से ही सब जगह आनेद ही आनन्द है.

संतों की तथा क्रांतिकारियों की भूमि पर यह अधिवेशन संपन्न हो रहा है. इस स्थान को 'प्रकाशभाई मोहाडीकर नगर' नाम दिया है. और व्यासपीठ को 'ग.म.केळकर व्यासपीठ' नाम दिया है. पूज्य साने गुरुजी अर्थात भाव साक्षरता का मूर्तिरूप, उनके चलते फिरते स्मारक प्रकाशभाई मोहाडीकर ने ''साने गुरूजी कथामाला'' के रूप में खड़ा किया है. केवल स्थापित ही नहीं किया अपितु उसे भावपूर्ण पद्धति से चलाया है. इसके लिए पूरा महाराष्ट्र जागृत किया. मंगलयात्रा के रूप में उनका साहित्य घर घर में पहुंचाया. बच्चों को कथा सुनाकर इनके मन को तैयार करके एक नई पीढी का निर्माण किया. प्रकाशभाई कहते थे ''मुले म्हणजे फुले'' (''बालक अर्थात् फूल'') उनमें उत्तम सुगन्ध भरने की जिम्मेदारी पालकों की तथा शिक्षकों की है. इसके लिए पाठशाला में नियमित कथामाला की शारवा चलनी चाहिए तथा घर में माता पिता ने भौतिक सुविधाओं के साथ साथ अपने बच्चों के भावों का भी ध्यान करना चाहिए.

भाई बहनो ! विज्ञान तंत्रज्ञान की प्रगतिशिखर पर है. घर घर में इस तंत्र ज्ञान का आनन्द लिया जा रहा है. इस तंत्रज्ञान के हम गुलाम हो रहे हैं. मां बाप और बच्चे आपस में Whats app. viber द्वारा जुड़े हुए हैं. इंटरनेट के युग में जग नजदीक आ गया है पर मनुष्य दूर जा रहा है, मूल्यों की अपेक्षा मालकी की भाषा हर कोई बोलता है. पद प्रतिष्ठा ताकत, पैसा, के लिए सत्ता की स्पर्धा शुरू हो गई है. भौतिक साधनों की भीड़ में मनुष्य गुम हो रहा है. उदरनिर्वाह के लिए शिक्षण या जीने के मूल्यों के लिए जीवन शिक्षण यह निश्चित करना चाहिए. पहले शाम को भगवान के सामने दीया लगा कर ''शुभंकरोती'' कहने वाले, मां बाप को वन्दन करके साथ भोजन करनेवाले, अपयश आने की परवाह नहीं यह अपने संस्कार संभाल के रखना. ऐसा कहने वाले कुटुंब विरले होते जा रहे हैं. ऐसे परिवारों में से आने वाले बच्चे उतनी फीस देकर

अत्याधुनिक पाठशाला में शिक्षण ले रहे हैं. चरित्र निर्माण इतना ही उनके सामने ध्येय है. इस दौड़ धूप में इच्छा होते हुए भी अच्छा मनुष्य बनने के लिए जो संस्कार चाहिए वे नहीं मिलते. ऐसा होने पर के परिणाम हम देख रहे हैं. रोटी कमाने का शिक्षण देनेवाली लाखों संस्था पैदा हो रही हैं. पर यह रोटी आनन्द से कैसे खाएं इसका शिक्षण देनेवाली शिक्षण संस्था बिरली ही हैं. गरीबी में रहकर भी सत्व और स्वत्व को टिकाया जा सकता है. इसका आदर्श कम हो रहा है. यह विचारों की दुर्बलता या नकारात्मकता न होकर धधगता सत्य है. इस पर कथा कथन द्वारा संस्कार डालना ही एक मात्र उपाय मुझे लगता है.

साने गुरुजी कथामाला के दूत होने के कारण अपने सामने यह बड़ा आह्वान है. यह असम्भव नहीं पर कठिन है. देशभर की पाठशालाओं के माध्यम से अपना यह विचार संस्कार बच्चों में डाल सकते हैं. इसके पहले अपने विचारों का प्रभाव शिक्षण संस्था, संस्थाचालक, पालक इनपर करने की आवश्यकता है. बच्चे भी मां बाप से पहले शिक्षक को प्रमाण मानते हैं. विद्यालय की बाई की कही प्रत्येक बात पर विश्वास होता है. उसका अनुकरण करते हैं. शिक्षक की छोटी छोटी गतिविधि पर बच्चों का सूक्ष्म निरीक्षण होता है और वे वैसा ही अनुकरण करते हैं. ऐसे समय में शिक्षकों ने अपनी आचरण संहिता निश्चित करनी चाहिए. कथामालाने विद्यार्थी निर्माण करने के लिए आदर्श शिक्षक कार्यकर्ता कैसे गठन करें इस दिशा में प्रयत्न करने की समय की गरज है. डॉ.कोठारी जी के कहे अनुसार राष्ट्र का भविष्य पाठशाला के कमरों में गढते हैं पाठशाला में कथामाला, यह उपक्रम मनःपूर्वक चलावें तो सकारात्मक परिणाम का अनुभव आऐगा ऐसा विश्वास है. आज की नई शैक्षणिक नीति, मूल्य-शिक्षण जैसे नए विषय पर जोर दिया रहा है. सच तो यह है कि शिक्षण यह मूलतः मूल्याधिष्ठित होता है और होना भी चाहिए. जिस समय इन विषयों का अन्तर्भाव अभयासक्रम में नहीं था उस समय विद्यार्थियों में मूल्य अंकित नहीं होते थे क्या ? ऐसा प्रश्न निर्माण होता है.

पूज्य साने गुरुजी का चरित्र इस का उत्तर है. २४ दिसम्बर १८९९ में पूज्य साने गुरुजी का जन्म हुआ. पालगड उनका गांव माँ ने पंढरीनाथ नाम रखवा परन्तु सबलोग पांडुरंग पुकारते थे. माँ इन्हें लाड से शाम कहती थी शाम की माँ बहुत स्वाभिमानी थी. घर का शहतीर बदला और उन्होंने अलग रहने का निर्णय लिया. गांव में ही पीहर, पर वहाँ न रहते हुए अपने हाथ की सोने की चूड़िया

बेचकर अपने अधिकार का घर बांधकर वहाँ रहना पसंद किया. खूब कष्ट उठाए और बच्चों के शिक्षण के लिए अनुकुल परिस्थिति निर्माण की. मां के परिश्रम को देखकर शाम ने मन में निश्चय किया था कि में खूब खूब पढूँगा! बड़ा बनूंगा और मां की खुशी के लिए काम करूंगा. और वह शाम ने सिद्ध करके दिखाया. ज्ञान के लिए भाग दौड की. दो आने के लिए पाठशाला से नाम हटा दिया गया. गांव में चौथी तक ही शाला है इसलिए आगे की पढाई का डर. ऐसी हालत में माधुकरी भिकारी बनकर शिक्षण लेने का निर्णय शाम ने लिया. आगे का शिक्षण दापोली की पाठशाला में लिया. शिक्षण के लिए कितना परिश्रम! इस परिश्रम के बल पर शाम साने गुरूजी बन गया. १४ जून १९२४ को अमळनेर की पाठशाला में शिक्षक बन गए. आगे छात्रावास के संचालक बने. बच्चों को खूब प्रेम देकर अपना बना लिया. कहानियों से स्वअनुशासन सिखाया. साने गुरुजी बच्चों के गले की ताबीज बन गए. १९२८ में विद्यार्थी नाम की मासिक पत्रिका शुरू की. इस संदर्भ में गुरूजी कहते हैं ''शाला में जो शिक्षण तुम नहीं ले सकते, ऐसे सच्चे विचार प्रवर्तक शिक्षण, विचार दृढ करनेवाले शिक्षण यह मासिक तुम्हें देनेवाला है.'' शिक्षकों के लिए वे कहते हैं सही शिक्षक तो वह है जिसके चारोंतरफ गुड की भेली को जैसे मकौड़े चिपके रहते है वैसे बच्चे जमा होने चाहिए.

पूज्य गुरूजी पर महात्मा गांधी जी के विचारों का बहुत ज्यादा प्रभाव था. वे स्वयं खादी का प्रयोग करते थे. १९३० में उन्होंने शिक्षक की नौकरी छोड़कर नम्रता से कायदा भंग के आन्दोलन में सहभाग लिया. राष्ट्रीय काँग्रेस का पहला अधिवेशन फैजपुर में लेकर सफल होने का प्रयत्न किया. १९४२ के आंदोलन में भूमिगत रहकर स्वतंत्रता का प्रचार प्रसार किया. राष्ट्र सेवादल के माध्यम से उन्होंने राजकीय कार्य किए, 'पत्री' उनकी पहली कविता जो कि काव्यसंग्रह में देशभक्ती पर लिखी. उसमें बलसागर भारत होवो जैसी कविताओं का भारतीयों के मन पर प्रभाव होता देख ब्रिटीश सरकार ने काव्य संग्रह की प्रति जप्त कर ली थी.

समाज में जाति भेद. अस्पृश्यता जैसी बुरी रूढी और परम्पराओं का साने गुरूजी ने सदा विरोध किया. पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर में हरिजनों को प्रवेश मिले इसके लिए महाराष्ट्रभर दौरा कर जनता का समर्थन प्राप्त किया. अन्त में उपवास का मार्ग अपनाकर एक पांडुरंग ने दूसरे पांडुरंग को सच्चे अर्थ में मुक्त किया.

स्वतंत्रता मिलने के बाद समाजवादी पक्ष में शामिल हो गए. आजादी के बाद आन्तर भारती आंदोलन के माध्यम से उन्होंने एकात्म भारत के स्वप्न देखे. विविध राज्य के लोगों ने एक दूसरे की संस्कृति समझनी चाहिए. अनेक भाषा जाने यह इस आंदोलन का उद्देश्य था. वे स्वयं तमिल, बंगाली इत्यादि भाषा सीखे थे. १९४८ में उन्होंने ''साधना'' साप्ताहिक शुरु की. उन के कथा. उपन्यास, लेख, निबंध, जीवनी, कविता आदि में उनके संवेदनशील हृदय की पहचान को समाज के कई मानवतावाद, सामाजिक सुधार व देशभक्ती उनके साहित्य में दिखती है. उन्होंने कुल ७३ पुस्तकें लिखीं. उनकी कविता सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रेरणा तथा बल देती है. इसलिए कहा जाता है ''श्यामची आई'' यह मातृप्रेम का महा मंगल स्तोत्र माजा जाता है. उन्होंने ''स्त्री जीवन पर आधारित चक्की पर की ओव्या (गीत) का संग्रह लिखवा.''

''भारतीय संस्कृति'' जैसे तत्वज्ञानात्मक ग्रंथ लिखवा. साने गुरुजी बड़े कोमल हृदयी थे. विनोबाजी ने उनका वर्णन ''अमृत पुत्र'' कहकर किया. आजादी के लिए उन्होंने पराकोटि का त्याग व प्रयत्न किया, सुन्दर देश का स्वप्न देखा. उनकी कल्पना के भारत का अलग ही स्वप्न था. आजारी के बाद जो अनुभव मिले वे उनके संवेदनशील मन को हताश अधिक क्लेशदायी और उन्होंने आत्मक्लेश करते हुए मृत्यु को स्वीकार किया.

प्रकाशभाई का तथा साने गुरूजी का साथ बहुत समय तक था. पूज्य गुरूजी की मृत्यु की खबर प्रकाशभाई के मन को क्लेशदाई लगी. भाई ने कहा 'मेरा दुःख था अपार, मेरी मां की मृत्यु के बाद मुझे मां की याद आने नहीं दी. प्रत्येक उपक्रम में मुझे शामिल किया. उनका और मेरा २० साल का साथ था. साने गुरुजी गए मेरा सबकुछ गया.'' प्रकाशभाई ने आठ दिन भोजन नहीं किया शोक व्यक्त किया. गुरूजी के शब्द स्मरण हो आऐ.

कर्मा मधे दिव्यानंद
सेवा मध्ये दिव्यानंद
नाही अन्य कशाचा छन्द
नाही काही जरूर
आम्ही देवाचे मजूर
आम्ही देशाचे मजूर
आम्ही कष्ट करू भरपूर

इस सीख से शोक से उभरकर सानेगुरूजी का प्रिय स्मारक बनाने का निश्चय किया. उनके अन्यत्र प्रिय कार्य के रूप में २४ दिसम्बर १९५१ में 'साने गुरूजी कथामाला' की स्थापना की. आज ६२ वर्ष हो गए यह संस्कार यज्ञ अविरत शुरू है तथा चलता रहेगा.

गुरूजी का अमृतकुंभ प्रकाशभाई ने संभाला. यह अमृतकुंभ महाराष्ट्र के कोने कोने में तथा बाहर भी फैला. उसके अमृतकण विद्यार्थियों के हृदयोंतक पहुंचाए तथा अपनी माता के प्रति (पूज्य साने गुरुजी) कृतज्ञता व्यक्त की. 'गुरूजी का प्रयत्नशील पुत्र' मानकर रातदिन काम किया. संस्कार संवर्धन की सिर्फ गप्पे नहीं मारे परन्तु महाराष्ट्रभर फिरे. मंगल वाङ्मय का प्रचार प्रसार किया. अच्छी कहानियां सुनकर बच्चों का दिल जीता.

अमरहिंद मंडल की वसंत व्याख्यानमाला, साने गुरुजी विद्यालय, शान्तिवन आदि सबके स्थापित करने में प्रकाशभाई का महत्वपूर्ण सहभाग था. उम्र के ७५ वें वर्ष महाराष्ट्रभर मंगलयात्रा का संकल्प प्रकाशभाई ने किया. लाखों बच्चों को साने गुरूजी की कहानियां कहीं, २० लाख रूपयों का साहित्य घर घर में पहुंचाया. इन सब कार्यों में उनकी सुविद्य पत्नी उषाताई तथा भाई राम मोहाडीकर सदा साथ थे. ''प्रकाश-उषा'' यह लक्ष्मी नारायण की जोडी जैसे समाज के मन का अंधेरा दूर करने के लिए जन्मी थीं व साथ देकर अनन्त में विलीन हो गईं.

साने गुरुजी कथामाला का ही दूसरा भाग अर्थात साने गुरूजी कथा कथन प्रबोधिनी जिसके अन्दर तथा महाराष्ट्र की विविध पाठशालाओं में जाकर उन्होंने शिक्षक तयार किए. इस प्रबोधिनी की स्थापना का सारा श्रेय ग.म.केळकर को जाता है. कथामाला जैसे साने गुरुजी का जिंदा स्मारक है वैसे ही कथाकथन प्रबोधिनी यह केळकर का जीवित स्मारक हैं. प्रबोधिनी की तरफ से हजारों से ज्यादा कथाकथन तंत्रका प्रशिक्षण वर्ग महाराष्ट्र में हुआ.

कथामाला का यह समृद्ध इतिहास सक्षम कार्यकर्ताओं को बढ़ाया है. भविष्य में भी यह काम इसी उत्साहसे चलाने के लिए एक युवा पीढ़ी आवश्यक है. इसके लिए प्रत्येक जिले में कथामाला कार्यकारणी तयार करके यह कार्य उत्साह से करने की आवश्यकता है. अखिल भारतीय साने गुरूजी कथामाला की तरफ से आजतक कई जगहों पर अधिवेशन सम्पन्न हुए हैं. कथाकथन तंत्र व मंत्र के हजारों प्रशिक्षण शिविर हुए है. इन सबका ध्यान करके महाराष्ट्र के कौन से भाग में काम अभी पहुंचा नहीं वहाँ जाना जरूरी है. यह विचार

कथामाला कार्यकर्ताओंने करना चाहिए.

साने गुरुजी के आन्तर भारती के स्वप्न पूर्ण करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर हैं.

साक्री तालुका एज्युकेशन सोसायटी साक्री, ता.साक्री, जि.धुळे इस ग्रामीण भाग की संस्था में १९९२ को कथामाला का अधिवेशन संपन्न हुआ था. इस अधिवेशन के लिए मेधाताई पाटकर, मधुकरराव चौधरी, न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, फ्रांसिस दिब्रेटो, प्रकाश भाई तथा असंख्य कार्यकर्ता थे. इस निमित्त से सारा जिल्हा साने गुरुजी के विचार व गीतों से गुंजायमान हुआ. प्रकाशभाई ने भी नवापुर आदिवासी भाग में मंगलयात्रा की. उसकी याद आज भी मन को आनन्द देती है. साने गुरुजी के आन्तर भारती बाल आनन्द मेले के स्वप्न पूर्ण करने के लिए साक्री तालुका एज्युकेशन सोसायटी, साक्री की संस्थाने कदम बढाए हैं. २८ से ३० अक्टूबर २०१३ के बीच बाल आनन्द मेला सम्पन्न हुआ. राष्ट्रीय युवा योजना के प्रमुख डॉ.एस.एन.सुब्बाराव, सेवादल के ज्येष्ठ कार्यकर्ता लीलाधरजी हेगडे, आन्तरभारती के विश्वस्त सदाविजयजी आर्य, समन्वयक नरेन्द्र वडगांवकर तथा असंख्य कथामाला कार्यकर्ता इस मेले में उपस्थित थे. बालकों के चेहरे का आह्लद देखकर,

''करिन रंजन जो मुलांचे, जडेल नाते प्रभुशी तयाचे !''

बच्चों का जो मनोरंजन करेगा उसका नाता प्रभुसे जुडेगा. इस गुरूजी के आदर्श वाक्य की अनुभूती हुई.

शिक्षक, शिक्षणसंस्था, शिक्षण तथा इससे संबंधित शासन के निर्णयों के बारे में चिंतायुक्त परिस्थिति है. शैक्षणिक मूल्य की वृद्धि तथा क्षय रोकना इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए कथामाला उपयोगी है. आज शिक्षण एक बाजारू वस्तु हो गई है तथा शिक्षण में विषमता बढ़ी है. भारत के प्रत्येक बालक को अनिवार्य, निःशुल्क, निपुणतापूर्ण व समान शिक्षण मिलना ही चाहिए तथा यह जिम्मेदारी शासन ने लेनी ही चाहिए. इस के लिए भी कथामाला के कार्यककर्ताओंने समय देकर यह मांग मान्य कराने में मदद करनी चाहिए.

हम सब इस उद्देश्य के लिए संकल्प करें कि इस भाव साक्षरता के मंदिर के पांडुरंग की आराधना करके सारे महाराष्ट्र भर में प्रकाश फैलाने वाले को वन्दन करके उनकी सद्दीच्छा पूर्ण करने की कसम इस अवसर पर लेंगे.

धन्यवाद ! ❑

समाचार भारती-३

गुजरात में साने गुरुजी जयंति

दिनांक २४.१२.२०१३ (मंगलवार), समय दोपहर १.३० से शाम के ४.३० बजे तक . स्थान सयाजी बाग, जोय ट्रेन स्टेशन, बडौदा (गुजरात), शिशुओं की संख्या ७०, अध्यापिकाओं की संख्या - ०६, कुल संख्या - ७६

दोपहर के १.३० बजे तक सयाजी बाग जोय ट्रेन रेल्वे स्टेशन, बडौदा (गुजरात) ''आंतर भारती'' के अलग अलग विस्तार के कुल ७० बच्चे एवं अध्यापिकाएँ एकत्रित हुई थीं.

२.०० से २.३० बजे तक बच्चोंने जोय ट्रेन की मुसाफरी का लुत्फ उठाया. चार पाँच बच्चों को छोडकर हर एक बच्चा पहली बार जोय ट्रेन में बैठा था.

२.३० से ३.३० बजे तक बच्चों को उद्यान (वाटिका) में बिठाकर उसके बाद ''श्री साने गुरूजी'' कौन थे? उनकी संक्षिप्त जानकारी दी. सयाजी बाग में मछली घर के पिछले वाले उद्यान (वाटिका) में बच्चों को खेलकूद साधनों द्वारा क्रीडा में हिस्सा दिलवाया.

खेलकूद निम्नलिखित थे :

१) रस्सी कूदना २) रिले दौडना ३) खो-खो ४) मेंढक छलाँग ५) खडी खो-खो ६) एक मिनट की खेलकूद ७) क्रिकेट आदि.

३.३० से ४.३० तक कार्यक्रम में शामिल बच्चों को स्वल्पाहार करवाया गया.

''साने गुरूजी'' के जन्म दिन के अवसर पर एवं दूसरे दिन ''नाताल'' (क्रिसमत) होने से स्वल्पाहार में बच्चो को पेस्ट्री (केक), चोकलेट एवं समोसा खिलाया गया.

२४ दिसम्बर २०१३ ''साने गुरूजी'' स्मृति के उपलक्ष्य में ''आंतर भारती'' बडौदा (गुजरात राज्य) संस्था द्वारा संचालित गरीब विस्तार में प्रवृत केन्द्र अधिनस्थ कुल ७० शिशुओ को ''सयाजी बाग'' में जोय ट्रेन की सफर तथा मुलाकात का लुत्फ

समाचार भारती-४

साने गुरुजी जयंति के कार्यक्रम किनवट में

किनवट तालुका : साने गुरुजी जयंती व साने गुरूजी रूग्णालय के वर्धापन दिवस के समारोह का उद्घाटन मंगलवार (२४ तारीख) विलास पाटनकर तथा रेणुका पाटणकर के साथ दीप प्रज्वलन करके तथा साने गुरूजी की तस्वीर का पूजन करके हुआ. अध्यक्ष स्थान पर अभियन्ता संजय भंडारी थे.

इस अवसर पर उद्घाटन के पश्चात बाल आनंद महोत्सव लिया गया. उद्घाटन पंचायत समिति के गटशिक्षणाधिकारी डी.जी.देवणे ने किया. इस अवसर पर रंग भरना तथा चित्रकला स्पर्धा हुई. स्पर्धा का उद्घाटन बालचित्रकार समीर सुनील व्यवहारे ने डी.जी.देवणे का चित्र निकाल कर किया. बाल आनन्द महोत्सव में प्रणाली दिलीप बेद्रे एवं साक्षी धनंजय नाईकवाडे दो विद्यार्थियों का जन्मदिवस मनाया गया.

कक्षा ४ से ७ वीं तक के विद्यार्थियों के लिए रंग भरना व ९ वी व १० वीं के विद्यार्थियों के लिए चित्रकला स्पर्धा हुई. इसमें शहर के विविध पाठशाला के सैकडों विद्यार्थी सहभागी हुए. इस स्पर्धा में विद्यार्थियों ने अपने होश खोकर चित्र रंगाए तथा चित्रित किए. ऐसा ही ८ वीं के आगे की कक्षाओं के विद्यार्थियोंने हस्तकला स्पर्धा में भाग लेकर कपड़े की गुडियां तयार कीं.

शुरू में साने गुरुजी रूग्णालय के प्रमुख तथा भारत जोड़ो युवा अकादमी के अध्यक्ष डॉ.अशोक बेलखोडे ने अपने प्रस्ताविक से कार्यक्रम के आयोजन की भूमिका प्रस्तुत की. सूत्रसंचालन उत्तम कांविदे ने किया. इस अवसर पर मुरलीधर बेलखोडे, शोभा बेलखोडे सह शिक्षक, पालक, नागरिक बडी संख्या में उपस्थित थे.

(पृष्ठ १७ से...)

अपने मनोगत व्यक्त किए. रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ.

लोकसेवा प्रतिष्ठान संचालित व विधान सभा सदस्य श्री दीपक पायगुडे द्वारा स्थापित नेताजी सुभाष चंद्र बोस सैनिक विद्यालय, फुलगाव के सुरम्य, सुव्यवस्थित, सुविधा संपन्न प्रांगण में उत्तम व्यवस्था के साथ श्री चंद्रकांत इंदुरे व श्री कराळे के अथक नियोजन व परिश्रम से ही यह अधिवेशन सफल हुआ.

(चित्र मुखपृष्ठ पर)

हमारी पहचान - भारतवासी या .... ?

- रवीन्द्र अग्निहोत्री

देश के स्वतंत्रता आन्दोलन के समय के एक नेता थे - डा.सैय्यद महमूद, सुशिक्षित व्यक्ति थे, पत्रकार भी थे और स्वतंत्र भारत के "Indian Diplomat in USA" रहे. इलाहाबाद में नेहरू जी के आनंद भवन में उनका बहुत आना-जाना था और नेहरू परिवार से उनकी बहुत निकटता थी. उन्होंने कई विदेश यात्राएं भी की. ऐसी ही एक यात्रा के दौरान एक घटना ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी. उस घटना का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है.

''मेरे साथ जर्मनी में एक ऐसी घटना घटी जिसने मेरी जिंदगी का रुख ही बदल दिया. जब मैंने वह घटना गांधी जी को सुनाई तो उन्होंने कहा कि इसे बाद-बार और हर जगह सुनाइए और इसे सुनाते हुए कभी न थकिए. हुआ यह कि जब मैं जर्मनी पहुंचा तो प्रो.स्मिथ से मेरी मुलाकात हुई. वे बहुत बड़े विद्वान थे. उन्होंने हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति, वेद आदि के बारे में मुझसे कई सवाल किए जब मैं उनमें से किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पाया तो डा.स्मिथ बड़े हैरान हुए. मुझे ख्याल आया कि मैं बनारस (वर्तमान वाराणसी) से आया हूँ, इसीलिए शायद प्रोफेसर मुझे हिन्दू समझ रहे हैं. मैंने उनसे कहा कि मैं हिन्दू नहीं हूँ.

उन्होंने कहा, 'मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप मुसलमान हैं, आपका नाम महमूद है. आप सैयद खानदान के हैं. मगर क्या आप हाल ही में अरब से जाकर हिन्दुस्तान में बसे हैं ?'

इस पर मैंने जवाब दिया, 'नहीं, पुश्तों से हमारे आबा व अजदाद हिन्दुस्थान में रहते आए हैं और मैं भी हिन्दुस्तान में ही पैदा हुआ हूँ.'

'क्या आपने गीता पढ़ी?' उन्होंने सवाल किया.

मैंने कहा, 'नहीं.'

उनकी हैरानी बढ़ती जा रही थी और मैं उनकी हैरानी और सवालों से परेशान भी था, और शर्मिन्दा भी. उन्होंने फिर पूछा, 'मुमकिन है आप अपवाद हों, या

क्या सब पढ़े - लिखे हिन्दुस्तानियों का यही हाल है?' मैंने उन्हें बताया कि ज्यादातर हिन्दुस्तानियों का चाहे वे मुसलमान हों या हिन्दू यही हाल है हम एक - दूसरे के धर्मों और उनके लिटरेचर के बारे में बहुत कम जानते हैं. इस पर वे सोच में पड गए.

इस घटना ने मेरी ज़िन्दगी पर भी बहुत गहरा असर डत्तला, मैंने सोचा, वाकई, हम हिन्दुस्तानियों की कितनी बड़ी बदकिस्मती है कि हम सदियों से एक दूसरे के साथ रहते आए हैं. पर एक - दूसरे के धर्म, सभ्यता और संस्कृति तथा रस्मों - रिवाज़ से कितने अनभिज्ञ हैं. और मैंने जर्मनी में रहते हुए ही हिन्दू धर्म, खास तौर पर गीता का अध्ययन शुरु कर दिया (विस्तार से पढ़ें, नीति, भारत विकास परिषद् नई दिल्ली, अगस्त १९९४ पृष्ठ ३४)'

इस घटना को लगभग आठ दशक बीत चुके हैं, पर आए दिन ऐसी घटनाएं सुनने को मिलती हैं जिनसे यही सिद्ध होता है कि हमारे देश की स्थिति में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं आया है बल्कि अब नई पीढ़ी के सन्दर्भ में तो एक आयाम और जुड़ गया है और वह यह कि ''सुशिक्षित'' होने के बावजूद वे अपने ही धर्म, उसके ग्रन्थ, उसकी आधारभूत मान्यताओं आदि से अनभिज्ञ हैं. अपने ही धर्म, उसके ग्रन्थ, उसकी आधारभूत मान्यताओं आदि से अनभिज्ञ हैं. इसीलिए अनेक लोग उनके इस अज्ञान का परिणाम हैं. लगभग दो वर्ष पहले का एक समाचार याद आ रहा है. महाराष्ट्र के पं.गुलाम दस्तगीतर बिराजदार की तरह रामपुर (उत्तर प्रदेश) के श्री सैयद अब्दुल्ला तारिक सुशिक्षित व्यक्ति हैं. उन्होंने कुरान का तो अध्ययन किया ही है, साथ ही वेदों का भी अध्ययन किया है. अतः उन्हें इन महान ग्रंथों की समानताओं एवं विशेषताओं पर व्याख्यान देने के लिए जब - तब आमंत्रित किया जाता है. ऐसे ही एक व्याख्यान के लिए उन्हें हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली में बुलाया गया. लगभग दो सौ श्रोता हाल में बैठे हुए थे जिनमें लगभग साठ प्रतिशत 'हिन्दू' थे. श्री तारिक ने श्रोताओं से प्रश्न किया कि जिस प्रकार कुरान मुसलमानों का, या बाइबिल ईसाइयों का आधारभूत ग्रन्थ हैं. ऐसा हिन्दुओं का कौन - सा ग्रन्थ है? पर श्रोताओं में से कोई भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका. जरा ध्यान दीजिए कि दो सौ श्रोताओं में साठ प्रतिशत हिन्दू थे, और ये कोई अनपढ़ नहीं. विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले लोग थे. पर इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके. तब

श्री तारिक ने स्वयं बताया कि वह ग्रन्थ है ''वेद'' जो संस्कृत में चार हैं. इसके बाद कुछ पूछने की गुजाइश तो नहीं थी. फिर भी उन्होंने पूछा कि क्या किसी को कोई वेद मंत्र याद हैं? क्या आपने कोई वेद देखा है? ह्नउन्होंने मनुस्मृति और महाभारत के बारे में भी पूछा, पर उत्तर नहीं मिला (विस्तार से पढ़ें, द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली, २ नवम्बर, २००८, पृष्ठ ७)

पिछले दिनों भारत में सोनी टी.वी. पर एक कार्यक्रम आ रहा था. ''कौन बनेगा करोड़पति'' प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन इसे संचालित कर रहे थे. जो पाठक इसकी संकल्पना से परिचित न हों उन्हें बता दें कि इसमें विभिन्न प्रकार के तथ्यों से संबंधित प्रश्न पूछे जाते थे और शुद्ध उत्तरों पर पांच हज़ार से शुरू करते हुए पांच करोड़ तक की राशि दी जाती थी. कार्यक्रम कंप्यूटर पर आयोजित किया गया एक कड़ी प्रतियोगिता के बाद चुने गए दस प्रतियोगियों को पहले एक सरल - सा प्रश्न दिया गया जिसका उत्तर उन्हें निर्धारित समय में देना होता था. समय पूरा हो जाने पर अमिताभ पहले उसका शुद्ध उत्तर बताते थे और फिर यह कि किस-किस प्रतियोगी ने उसका शुद्ध उत्तर दिया. इनमें से जो प्रतियोगी सबसे कम समय में शुद्ध उत्तर देता था. उसे हॉट सीट के लिए आमंत्रित किया जाता था. ऐसे ही एक सरल - से प्रश्न में चार प्रसिद्ध ''धर्म प्रवर्तकों'' के नाम देकर उन्हें ऐतिहासिक काल क्रम से व्यवस्थित करने के लिए कहा गया अर्थात जो पहले हुआ उसका नाम पहले रखना था. नाम थे - गौतम बुद्ध, मोहम्मद साहब, ईसा मसीह और गुरू नानक जब परिणाम सामने आया तो पता चला कि दस प्रतियोगियों में से केवल दो प्रतियोगी ही इसका शुद्ध उत्तर दे पाए.

ये सभी घटनाएँ हमारे उसी अज्ञान के प्रमाण प्रस्तुत कर रही हैं. आवश्यक है कि हम अपने इस अज्ञान को दूर करें. अपने देश को यदि हम उसकी ''समग्रता में'' जानने का प्रयास करेंगे तो हमें अपने धर्म की भी बेहतर जानकारी होगी और इस देश में रहने वाले अन्य धर्मावलम्बियों के धर्म, रीति-रिवाज़ आदि की भी. ध्यान रखिए. विश्व में किसी भी व्यक्ति की पहचान इसी रूप में होता है कि वह किस देश का रहने वाला है. हमारी भी पहचान ''भारतवासी'' के रूप में होती. है, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई के रूप में नही. मैं काफी समय आस्ट्रेलिया रहा. जब भी कोई अपरिचित व्यक्ति मुझसे बात करता था तो

उसका प्रश्न होता था, Are you from India? मेरे Yes कहने के बाद भी वह यह नहीं पूछता था Are you hindu / muslim / christian ? वह अपना परिचय भी इसी रूप में देते हुए बताता था. I am from Britain / Spain / Greece / China / Vietnam etc. भारत में रहनेवाला कोई ईसाई या मुसलमान जब ईसा मसीह या मोहम्मद साहब को ही अपना आदि - अंत मान लेता है तो वह वैसी ही भूल करता है जैसी बहुत से हिन्दू आठवीं - नवीं शताब्दी के आदि - शंकराचार्य और उनके द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद को ही अपना सर्वस्व मान लेते हैं या कुछ सिक्ख यह मान लेते हैं कि गुरुग्रंथ साहब और दस गुरुओं के आगे-पीछे नहीं. ऐसी सीमित दृष्टि से देखने पर हमारा ध्यान सैकडों नहीं, हज़ारों वर्ष पुरानी उस सम्पदा की ओर जाता ही नहीं जो न केवल इस देश की, बल्कि पूरे विश्व की अनमोल थाली है. वह व्यापक दृष्टि हमें तभी मिल सकती है. जब हम यह विश्व की अनमोल थाती है. वह व्यापक दृष्टि हमें तभी मिल सकती है. जब हमारी सोच ऐसी होगी तब हमें अपने देश के बारे में, उसकी उपलब्धियों और उसकी सम्पदा के बारे में समग्र रूप में जानने की आवश्यकता शिद्दत से स्वयं महसूस होगी.

१३८, एम्.आई.जी.पल्लवपुरम, फेज़-२, मेरठ २५०११०, भारत.
agnihotriravindra@yahoo.com

समाचार भारती-५

गोवा में पू.साने गुरुजी जन्म दिन कार्यक्रम

आंतर भारती, गोवा युनिट की तरफ की से २४ दिसंबर २०१३ को कुडचडे, गोवा में पूज्य साने गुरुजी के जन्म दिन के अवसर पर साने गुरुजी के जीवनी पर एक कार्यक्रम हुआ.

इस दौरान अनेकों ने साने गुरुजी उन्हें कैसे भाये, कौन सा उनके जिवन का प्रसंग उनको याद है, उस प्रसंग को कथन किया. इस वक्त इस कथनी के समय कई बोलनेवाले भाव विभोर हो गये. कई खुद के आसूं न छिपा सके.

कार्यक्रम के आरंभ में साने गुरुजी के तसबीर को पुष्पहार अर्पण किया और दीप जलाया. प्रास्ताविक अध्यक्ष श्री सूरज नाईकने किया और अंत में कार्यदर्शी श्री एन.सुहास ने आभार प्रदर्शित किया.

इस कार्यक्रम में श्री सदानंद खांडेकर, श्री दिपक आरोळकर, श्री कृष्णनाथ देसाई, श्री प्रेमानंद देसाई, श्री विलास नाईक, श्री महेश रायकर, सौ.रायकर, श्री शिवराम, श्री प्रकाश नाईक आदि उपस्थित थे. **- एन.सुहास**

विशेष आलेख - १

नौकरी या व्यवसाय करनेवाले श्रद्धा और सम्मान के पात्र हैं !

- डा.जगदीश गांधी

१) क्या 'असाधारण' व्यक्तियों तथा 'साधारण व्यक्तियों' के द्वारा आत्मा के विकास में कोई फर्क है ? हाँ !

अ. समाज में कुछ 'असाधारण' तथा बिरले लोग ही ऋषि-मुनियों तथा महापुरूषों के रूप में विकसित हुए हैं जिन्होंने अपनी आत्मा के विकास के लिए कोई नौकरी या व्यवसाय नहीं किया. इन महापुरूषों ने पर्वतों, कन्दराओं, गुफाओं तथा घास-फूस झोपड़ियों या साधारण परिस्थितियो में रहकर तथा समाज में अत्यन्त सादा एवं सरल जीवन जीकर और व्यापक 'समाज के लिए उपयोगी बनकर' समाज की महती सेवा की और इस प्रकार अपनी आत्मा का विकास किया.

नौकरी या व्यवसाय करने वाले श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं -

ब. किन्तु 'साधारण व्यक्ति' केवल मजदूरी, किसानी, नौकरी, उद्योग या व्यवसाय के द्वारा समाज के सुचारु रुप से संचालन में तथा उसके विकास में योगदान कर व 'समाज के लिए उपयोगी बनकर' ही अपनी आत्मा का विकास कर सकता है. इसके अतिरिक्त आत्मा के लिए विकास का अन्य कोई उपाय नहीं है. यदि साधारण व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय न करें तो आत्मा का विकास कैसे करें? (अपने पापों को केवल परमात्मा को बताना चाहिये.) नौकरी या व्यवसाय करनेवाले श्रद्धा एंव सम्मान के पात्र हैं.

२) यदि व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय न करें तो अपनी आत्मा का विकास कैसे करें?

क्योंकि व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय के द्वारा अपनी आजीविका नहीं कमायेगा तो अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करेगा? अपनी स्वयं की कमाई न होने की स्थिति में व्यक्ति या तो भीख मांगेगा या दूसरों की कमाई खायेगा, या चोरी बेईमानी की रोटी आत्मा के विकास में बाधक हों. अतः ईमानदारी और परिश्रम से नौकरी या व्यवसाय करे 'समाज के लिये उपयोगी बनना' ही आत्मा के विकास का एकमात्र उपाय है. बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जिससे कि वे सशक्त समाज के निर्माण व विकास में अपना योगदान कर सकें. मनुष्य को ऐसा कैरियर चुनना चाहिए जिससे उसका आत्मिक विकास हो.

३) क्या हम नौकरी या व्यवसाय करते हुए ही आत्मा का भी विकास कर सकते है. हाँ -

प्रत्येक व्यक्त को अपनी आजीविका ईमानदारी से कमाने के लिए कोई न कोई छोटे से छोटा या बड़ा अपना उद्योग, व्यवसाय नौकरी या मेहनत मजदूरी करना, अखबार बेचना, जूतों में पालिश करना, ठेला लगाना, कुली का कार्य करना, कमजोर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना, रिक्शा चलाना आदि-आदि कोई न कोई कार्य अवश्य करना चाहिये. दूसरों की कमाई खाने या झूठ और पाप की कमाई खाने से हमारी आत्मा कमजोर होती है. जबकि छोटे से छोटा परिश्रम व ईमानदारी से कमाया एक पैसा भी हमारी आत्मा के विकास में सहायक होता है.

४) क्या नौकरी द्वारा आजीविका कमाना परमात्मा द्वारा निर्मित समाज की सेवा का साधन है ? हाँ !

अनेक लोग पवित्र सेवा भावना से सरकारी प्राइवेट वा समाज सेवी संस्थाओं में नौकरियों करते हैं या किसानी, मेहनत-मजदूरी का कोई कार्य कहरते हैं. जैसे-खेतीबाड़ी, शिक्षा न्यायिक, प्रशासनिक, सफाई, यातायात, मीडिया, चिकित्सा, रेलवे, पुलिस, सेना, बैकिंग, जल संस्थान, बिजली, सड़क, निर्माण आदि विभागोंमें कार्यरत रहते हुए जनता को अनेक प्रकार की जन सुविधायें उपलब्ध कराते हैं और समाज का संचालन एवं सुचारु व्यवस्था बनानरे में अपना योगदान करते हैं. किन्तु जो व्यक्ति अपने कार्यों को जनहित की पवित्र सेवाभावना से न करके निपट अपनी आजीविका कमाने की भावना से करते हैं वे स्वयं ही अपनी आत्मा का विनाश कर लेते हैं.

५) क्या उद्योग या व्यवसाय द्वारा आजीविका कमाना समाज की सेवा का साधन है ? हाँ !

एक उद्योगपति पवित्र मन से समाज के लिए उपयोगी वस्तुओं जैसे कपड़े का निर्माण करके या एक व्यवसायी आम लोगों को दैदिनक उपयोग की वस्तुएँ जैसी जनरल मर्चेन्ट, दवाई स्टेशनरी आदि को जहाँ बनती है वहाँ से एकत्रित करके उनके निवास के आसपास उपलब्ध कराके जन सुविधायें प्रदान करते हैं. उदाहरण के लिए एक छोटी सी किराने की दुकाने करने वाला अन्य अनेक सामानों के साथ एक छोटी सी सुई भी अपनी दुकान में रखता है. यदि वह ऐसा न करता तो हें एक सुई को भी खरीदने के लिए अपने नगर से काफी दूर स्थित दूसरे नगरे जहाँ सुई कारखाना स्थित है वहाँ जाना पड़ता. यदि मिल कपड़ा. यदि मिल कपड़ा न बनाये तो समाज की क्या स्थिति होगी?

८) क्या नौकरी या व्यवसाय द्वारा आजीविका कमानेवाले सम्मान के पात्र है? हाँ !

परिश्रम, ईमानदारी व जनसेवा की भावना से मजदूरी, मेहनत, नौकरी, व्यवसाय या उद्योगों के द्वारा आजीविका कमाने वाले व्यक्ति समाज के सुचारु रुप से

संचालन में व इसकी व्यवस्था बनाने में तथा इसके विकास में सहायक हैं. अतः ऐसे सभी व्यक्ति समाज के लिये श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं !

९) मनुष्य उहापोह, अनिश्चय एवं संशय की स्थिति में क्यों है ? अपना और परमात्मा का ज्ञान न होने के कारण -

आज मनुष्य उहापोह, अनिश्चय एवं संशय की स्थिति में रह रहा है. और निरन्तर यह प्रश्न हर व्यक्ति को अंतर से सदैव परेशान करता रहता है कि क्या नौकरी, उद्योग या व्यवसाय हमारी आत्मा के विकास में सहायक है या बाधक है? परमात्मा ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा शक्ति दी है. वह चाहे तो प्रभु की प्रसन्नता के हेतु जन सेवा के पवित्र उद्देश्य से अपनी आजीविका का उपार्जन मजदूरी, किसानी, नौकरी उद्योग या व्यवसाय के द्वारा करके अपनी आत्मा का विकास करले या फिर चाहे तो 'जनसेवा की पवित्र भावना से रहित' केवल अपनी आजीविका कमाने के लिए मजदूरी, किसानी, नौकरी या व्यवसाय करके अपनी आत्मा का विनाश कर ले ?

८) अपनी आत्मा के विकास के लिए क्या करें ?

क्या नौकरी, उद्योग धंधे या व्यवसाय जैसे भी चलता हो वैसे ही चलने दें. तथापि यदि उसमें कामचोरी, असावधानी, पाप और अपराध भी करना पड़े तो क्या उसे करते रहें और आत्मा के विकास के लिए और कुछ करें? जैसे-भजन-कीर्तन करना, यज्ञ-हवन करना, गंगा में डुबकी लगाना, तीर्थ करने जाना, कुछ पंडितों को हर साल भोजन कराना आदि-आदि. केवल पवित्र मानव सेवा की भावना से जो कार्य किया जाता हैं उससे ही आत्मा का विकास होता है न कि किसी भी अन्य तरीके से.

९. समाज विरोधी व्यवसाय से क्या हमारी आत्मा का विनाश होता है ? हाँ !

हाँ ! व्यापार से नहीं वरन् अधिक से अधिक लाभ कमाने की नियत से, नकली को असली वस्तु बताकर बेचने से तथा मिलावट करने और कम तौलकर देने और उसके पूरे दाम वसूलने से आत्मा कमजोर होती है. यदि हम व्यापार के नाम पर जुआ-सट्टा खिलाये, गंदे सिनेमा बनायें, वेश्या वृत्ति को बढ़ावा दें, शराब बनाने का धन्धा करें तो इस तरह के मानव अहित के एवं समाज विरोधी व्यवसाय करने से हमारी आत्मा का विनाश होता है. ईमानदारी तथा सेवाभाव से की गई लोक हितकर नौकरी या व्यवसाय के अलावा आत्मा के विकास का और कोई उपाय नहीं हैं.

१०. क्या अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन राजनीति में रहते हुए अपनी आत्मा का विकास कर सके ? हाँ !

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को जब कोई भी नौकरी नहीं मिली तो उन्होंने नाव चलाकर, जूतों पर पालिश करके एवं अखबार बेचकर व रद्दी की दुकान पर नौकरी करके ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाई और अपनी

आत्मा को विकसित किया. ईमानदारी और अति कठोर परिश्रम से अपनी आजीविका कमाते हुए समाज सेवा के अति महत्वपूर्ण कार्य करके अमेरिका जैसे बड़े देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए और गुलामी प्रथा को समूल नष्ट किया. अमेरिका से काल-गोरे व्यक्तियों के भेदभाव को समाप्त किया और सारे संसार में जनतन्त्र स्थापित किया. आइये, अपनी आत्मा के विकास के लिए हम भी पवित्र मन से उपयोगी बनें.

११. साधारण व्यवसायी 'रैदास' मोची के कार्य के द्वारा संत रैदास कैसे बन गये?

आप देखें, संत रैदास कभी मंदिर-मस्जिद गिरजे-गुरुद्वारे नहीं जाते थे और न पूजा-पाठ करते थे. रैदास जूते बनाकर अपनी आजीविका चलानेवाले एक व्यवसायी थे. पूरे मनोयोग एवं अति परिश्रम से जूते बनाते समय उनकी भावना यह रहती थी कि जो भी उनका जूता खरीदे, उसे जूता पहनकर किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो तथा जूता आरामदायी हो. साथ ही उनका जूता टिकाऊ हो ताकि ग्राहक को बार-बार पैसा न खर्च करना पड़े. रैदास जूता में आयी लागत में अपना उचित लाभ जोड़कर उसे एक दाम में बेचा करते थे. उनकी इस पवित्र भावना के कारण ही स्वयं भगवान की कृपा से उन्हें संत रैदास की उपाधि मिली.

१२. जुलाहे कबीर मानवता के मार्गदर्शक संत कबीर कैसे बन गये ?

कबीर एक जुलाहे थे. वह अपनी आजीविका कमाने के लिए कपड़ा बुनने का कार्य बड़ी ही लगन तथा सेवा भाव से करते थे. कबीर अपने जुलाहे के कार्य पूरी लगन, मेहन और तन्मयता से करते थे तथापि उनकी दृष्टि चादर बुनते समय इस बात पर रहती थी कि चादर में लगनेवाला एक भी धागा कमजोर न हो तथा वह बीच से टूटने न पाये ताकि चादर बहुत मजबूत बने और वह चादर जल्दी न फटे और जो ग्राहक उसे खरीदकर ले जाये उसके यहाँ वह चादर बहुत दिन चले और ग्राहक को बार-बार पैसे न खर्च करने पड़े. उन्होंने अपने व्यवसाय के द्वारा ही आत्मा का विकास किया और संत कहलाये.

१३. डॉ.राधाकृष्णन ने शिक्षक की नौकरी के द्वारा अपनी आत्मा का विकास कैसे किया ?

राष्ट्रपति डा.राधाकृष्णन एक शिक्षक की नौकरी करके अपनी आजीविका कमाते थे. उन्होंने एक आदर्श शिक्षक का आचरण करते हुए अपनी आत्मा का विकास किया. वह पूरे मनोयोग से बहुत दिल लगाकर अपने विषय को विद्यार्थियों को पढ़ाते थे तथा विषय की अच्छाई के साथ ही साथ विद्यार्थियों को आध्यात्मिक शिक्षा भी देते थे. इस कारण वे अपने विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय शिक्षक बन गये. उन्होंने अपनी नौकरी के द्वारा ही अपनी आत्मा का विकास किया. ❑